स्टेफानी क्राउजे

प्रमोद कुमार सिंह

जब कोमलान ने उसका फेमिलीनेम क्राउजे बताया तब मेरा हर शक जाता रहा। उसके दोस्त की छिनाल बीवी और कोई नही मिस्टर क्राउजे की बड़ी बेटी स्टेफानी ही थी। कोमलान के अनुसार वो शनिवार की शाम नियमित हवाना नाम के एक डिस्को मे गुजारती थी। पति पत्नी रहने को तो एक ही छत के नीचे रहते थे लेकिन दोनो ने अपनी अपनी आजादी ले रखी थी। कोई किसी के आड़े न आता था। मैथ्यूस की तरफ से उसे उसके हरेक दोस्त के साथ सोने की आजादी थी। कोमलान भी उसके साथ सो चुका था।

मै स्टेफानी और उसके परिवार से अपने सारे सम्बन्ध तोड़ चुका था पर स्टेफानी नाम के विषय को बन्द न कर पाया था। मुझे अक्सर उसकी याद आती थी।

जिस तरह से मै उससे अलग हुआ था उसका मुझे रह रह कर अफसोस होता था। जिस तरह का जीवन वो जी रही थी उससे सिर्फ वो ही अपने आप को बाहर निकाल सकती थी और मै शायद इसी चमत्कार का इन्तजार किये जा रहा था।

उससे मिलने और न मिलने की द्विविधा मे कई सप्ताह गुजरने को आए। स्टेफानी अपने को इस हद तक गिरा लेगी ये मैने न सोचा था। पागलपन के एक छोटे दौर से किसका जीवन नही गुजरा है!पर ये दौर स्टेफानी के जीवन मे कुछ ज्यादे ही लम्बा टिक गया था। उसका तो मुझे कोई अन्त ही न दिखता था।

न तो मुझे दुनिया समझ मे आ रही थी और न तो ईश्वर ही। एक ही व्यक्तित्व के दो आयाम एक दूसरे से पलट कर बड़ी दूर जा चुके थे। उनके बीच एक बहुत बड़ा फासला आ चुका था।

ऐसे ही एक शनिवार को मै अपना मन मजबूत करके हवाना जाने का फैसला किया। जब मै वहॅ पहुॅचा तो वहॅ के डान्सेज शुरू हो गए थे। आठ दस जोड़े थिरक रहे थे। फर्श पर उनके पैरों के नीचे तरह तरह की रोशनियों के गोले बने हुए थे। डिस्को अभी पूरी तरह भरा नही था। बार पर जा के मैने एक कॉक्टेल का आर्डर दिया और एक ऊॅची स्टूल घुमा कर बैठ गया।

जब हॉल की बत्तियॅा जली तब मैने देखा कि वहॅ जितने भी लोग थे या तो अफ्रिकन थे या फिर अरबी। औरतें ढली उम्र की जर्मन थीं जो इन्ही कम उम्र के अफ्रिकनों या अरबियों की व्याहता थीं। खैर इस तरह के बेमेल जोड़े बर्लिन मे कोई नई बात न थी। कोमलान भी तो बत्तीस वर्ष का ही था पर उसकी पत्नी साठ वर्ष की हो चली थी। उसकी बड़ी बेटी कोमलान से भी बड़ी थी। बाप तो वो न बन बन पाया था पर दो बार नाना बन चुका था।

तभी मेरी नजर स्टेफानी पर पड़ी जो एक मेज के पीछे अकेली बैठी अपलक मेरी तरफ देखे जा रही थी। मै उठा और उसकी ओर बढा। उसके ऑखो मे आई चमक मै देख सकता था। खड़ी हो कर उसना अपना हॅाथ बढाया और फिर अपना चेहरा झुका लिया और झुकाये ही रखा। मौन मुझे ही तोड़ना पड़ाःकैसी हो स्टेफानी!

ःठीक हूॅ। तुम कैसे हो!

ःमै भी ठीक हूॅ।

ःतुम्हे जब मै यहॅ देखी तब मुझे चौंकना पड़ा। तुम तो डिस्को वगैरह मे नही जाते। आज यहॅ कैसे!

ःतुमसे मिलने आया था। मैने सुना कि तुमने फिर शादी कर ली है!

उसने अपनी चार उॅगलियॅा जोड़ कर मुझे दिखा दी जिसका मतलब था चौथी बार।

ःबाल बच्चों के नाम पर फिर उसने अपनी चार उॅगलियॅा मुझे दिखा दीं।

ःतुमसे मैने एक बार तुम्हारी उम्र पूछी थी पर तुमने टाल दिया था।

ःमैने कब टाला था!पार्टी छोड़ कर तुम ही तो चले गए थे। तुम्हारा क्या अनुमान है!

ःअगर मै तुम्हारे चार बच्चों को भूल जाऊॅ तो तुम मुझे पच्चीस से ऊपर की नही दिखती हो।

स्टेफानी का चेहरा रक्ताभ हो उठा।

ऐसे ही छोटी मोटी बातों मे हम लगे हुए थे कि वो पूछ बैठीःएक बात तो बताओःतुमने मुझसे अपने सम्बन्ध क्यों तोड़ डाले!तुम्हे अफ्रिकन्स अच्छे नही लगते!

मै अपने मन की कड़वाहट की एक भाषा ढूॅढे जा रहा था पर उसमे मै कोई सख्ती नही चाहता था।

स्टेफानी की ऑखें मुझ पर जमी रहीं!

जब दूसरी बार उसने अपना सवाल दुहराया तब मुझे सब कुछ उगलना पड़ा ः

अफ्रिकन्स को तुम एक तरफ रखो। जहॅ तक तुमसे सम्बन्ध तोड़ने की बात है मै तुम्हे दो कारण गिनवा देता हूॅ। सुनना चाहती हो!

ःमै सुन रही हूॅ।

ःतो सुनो। अपने जन्मदिन की पार्टी मे अपने तलाकसुदा पति और अपनी बेटी की मौजूदगी मे तुम ही तो किसी गैर के जांघों के बीच बैठी थी। इसे मै कोई दूसरा नाम नही दे सकता। ये तुम्हारा बेहयापन था। तुम्हारे पापा के जन्मदिन पर उनका भी बेहयापन मैने अपनी ऑखों से देखा था। गई रात तक वो नाचने के नाम पर दूसरी औरतों को टटोलते रहे और तुम्हारी मॅा की ऑखें सूखती और नम होती रहीं। ये तुमसे भी तो न छुपा होगा। तुम क्यों नही उठीं और अपने पापा से जा कर कहाःपापा बन्द करो अपना बकवास। मॅा उदास नीचे बैठी हैं। तुम्हारे परिवार ने कुछ ज्यादे ही आजादी ले रखी है। मुझे इन आजादियों से घबराहट होती है।

स्टेफानी नैपकीन का एक कोना अपनी उॅगली मे लपेटती और खोलती रही।

मै उठा और बिना पूछे उसके लिए भी एक कॉक्टेल ले आया। डिस्को खचाखच भर चला था। स्टेफानी का पति मैथ्यूस हमारे मेज से लगे एक कुर्सी पर अपने चमड़े का काला जैकेट टिका कर पता नही किन किन के साथ नाचे जा रहा था। मैने कई बार स्टेफानी से कहा भीःअगर तुम्हे नाचना है तो जा कर नाचो। मै तुम्हे इन्वाईट करने से रहा। ये सब मेरे वश का नही है। पर वो न उठी और अपने नैपकीन से खेलती रही।

डिस्को के नाच गाने और जंगली होते चले जा रहे थे।

मैने अपने कॉक्टेल का ग्लास खाली किया पर उठने से पहले उसके बच्चों के नाम और उम्र पूछे।

स्टेफानी मुस्कराने लग पड़ीःबड़ी बेटी जिससे तुम मिल चुके हो. उसका नाम मुराद है।वो चौदह वर्ष की है।सबसे छोटा बेटा है. इनोसेन्ट।वो तीन साल का है।ये मुझे मैथ्यूस से मिला है।अपने दूसरे पति से एक बेटी है. काया जो आठ साल की है।तीसरे से भी एक बेटी ही है. लूसिया।वो पॉच वर्ष की है।जब मुराद मेरे गर्भ मे आई थी. तो मै उन्नीस वर्ष की थी।अब तुम मेरी भी उम्र जान ही गए होगे!
ःतुम दोनो तो यहॉ हो।बच्चे कहॉ है!
ःमॉ के पास।जनने को तो मैने बच्चे जने. पर मुराद को छोड़ कर मेरे दूसरे बच्चे मुझे स्टेफी ही कहते हैं और मेरी मॉ को मामा कह के बुलाते हैं।
मै हवाना दरअसल उससे माफी ही मॉगने गया था. पर मुझसे न रहा गया।यूॅ ही बड़बड़ाने लगा
ःक्या हो गया है तुम्हे!कब तक तुम इस तरह का जीवन जीना चाहती हो!कभीं कभी मुझे ऐसा लगता है. जैसे तुम असाईलम जैसी समस्या को अपने ढंग से सुलझाना चाहती हो।मेरी बला से तुम्हे जितने अफ्रिकनो को जर्मनी मे बसाना हो. बसाओ।ये मेरी समस्या नही है।मेरी समस्या तुम हो।ये जो वेगमय जीवन तुम जी रही हो. उसे रोको. वरना एक दिन तुम्हे बेहद पछताना पड़ेगा।तुमसे बस यही कहने आया था. कह कर मैने अपना जैकेट कन्धे पर डाला और चलने को हुआ।स्टेफानी भी अपना ओवरकोट पहनने लगी।
मैथ्यूस से बस उसने इतना ही कहाःमै घर जा रही हूॅ।तुम्हे जब आना हो आ जाना।
ओ के कह के मैथ्यूस अपने व्हिस्की की ग्लास खाली करके बार की तरफ बढ चला।
इस डिस्को से मेट्रो स्टेशन करीब ही था।हम चुपचाप चले जा रहे थे।
अचानक वो एक खाली बैंच की ओर इशारा करके पूछीःथोड़ी देर मेरे संग बैठ सकोगे!
ःइस ठंढ मे!जम के हम वर्फ हो जायेंगे।
ःफिर किसी पब मे चलें!
ःवहॉ क्या करना है!डिस्को की दो कॉक्टेल्स मेरे लिए काफी हैं।मुझसे और कुछ नही पीया जाएगा।फिर समय भी तो देखो।रात के दस बजने वाले हैं।
ःतो क्या हुआ!बर्लिन के ये जगने का समय है।
ःशायद तुम्हारे लिए होगा!मेरे लिए नही।
ःफिर हमारे घर चलते हैं!
ःतुम्हे मै तुन्हारे घर तक छोड़ सकता हूॅ. पर मै घर के अन्दर नही आऊॅगा।
ःपर क्यों!मुझसे डर लगता है!
ःतुमसे नही।इस तरह के जीवन से।तुम मुझसे कुछ कहना चाहती हो!
ःहॉ!
ःतो मेरे घर चलो।वापसी मे टैक्सी ले लेना।मै नही समझता कि मैथ्यूस को इस बात पर कोई एतराज होगा।
ःकहॉ रह रहे हो इन दिनो!
ःलिख्टरफेल्डे मे।ठीक बोटैनिकल गार्डेन के सामने।
ःअकेले या किसी के साथ!
ःअकेले।पर तुम्हे डरने की कोई बात नही है।
ःअब तक शादी क्यों नही की!
ःकिससे करता!जिससे मिलता हूॅ. उसके पास अपना कोई न कोई इतिहास होता है।तुम्हारे जन्मदिन पर भी मै कितनी आशा से आया था!वहॉ क्या देखा!सिर्फ तुम्हारा बेहयापन।पता नही!जर्मन लड़कियों को क्या हो गया है!
रास्ते भर मै स्टेफानी मे ही व्यस्त रहा. विशेष कर शुरू के दिनों मे और उसके जन्मदिन मेः
फ्राउएनहोफरस्ट्रासे के हॉस्टल मे आए मुझे कुछ ज्यादे दिन न हुए थे।इसके होफ से लगी एक जाली की दीवार थी. जो एफवाय नाम के लत्तरों से भरी हुई थी. जो सालों भर हरी रहती थी।इसी से लगी एक नीची दीवार थी. जिस पर गर्मी के दिनो मे मै घन्टो बैठा कोई न कोई उपन्यास पढा करता था।स्टेफानी से मेरा परिचय अभी तक न हो पाया था. पर लिफ्ट मे वो कई बार एक यही कोई पॉच छ वर्ष की लड़की का हॉथ थामे मिल चुकी थी।उसका कमरा भी तीसरी मंजिल पर ही था।
स्टेफानी ज्यादेतर अपनी नजरें झुकाए ही रखती थी।इस दुबली पतली. पर बेहद खूबसूरत स्टेफानी की बेटी भी उसी की तरह खूबसूरत और शर्मीली थी।बस उसे अपनी मॉ से उसका गोरा रंग न मिला था।
हॉस्टल के होफ मे मैने इन दोनो को किसी से हलो हाय कहते न सुनता था।शायद ये भी वहॉ मेरी तरह ही नये थे।
एक दिन शनिवार को यही कोई सुबह दस बजे के आसपास मैने एक लम्बे कद के अफ्रिकन लड़के को होफ मे आते देखा।जीन्स की पैंट. काले चमड़े का भारी भरकम जैकेट. गले मे एक भड़कीले रंग का स्कार्फ।जब वो मेरे बगल से गुजरा. तभी अचानक मेरी नजर उसके जूतों पर पड़ी।उसके दायें जूते की सोल कुछ ज्यादे ही मोटी थी।यही वजह थी कि चलते वक्त वो अपने शरीर का सारा बोझ बायें पॉव पर रखता था।पहले मैने सोचा कि आया होगा किसी से मिलने।दस मिनट ही गुजरे थे कि वो स्टेफानी की बेटी का हॉथ थामे हॉस्टल के मेन दरवाजे से बाहर आता दिखा।मुझे अपनी ऑखों पर विश्वास तक न हो पाया।
हर शनिवार को ये अफ्रिकन आता था और स्टेफानी की बेटी को अपने संग लिवा जाता था।बिना किसी से पूछे मेरे लिए एक बात तो स्पष्ट ही थी कि स्टेफानी इसकी तलाकसुदा पत्नी है और ये बच्ची उनकी समवेत बेटी है।मुझे बस ये रिश्ता समझ मे नही आ रहा था जो कुछ ज्यादे ही बेमेल था।स्टेफानी की खूबसूरती मोन के पंखुड़ियों जैसी थी।उसे बस दूर से निहारा जा सकता था. छूआ नही जा सकता था।भोगने की बात तो दूर की रही।
स्टेफानी से मिलने एक अधेड़ उम्र का दम्पति एक यही कोई अट्ठारह उन्नीस वर्ष की लड़की के साथ मिलने आया करता था।जब वो वापस लौटते थे. तब स्टेफानी उन्हे अपनी बेटी के साथ सड़क तक छोड़ने जाती थी।समय के साथ ये मै जान चला था कि वो उसके माता पिता हैं और स्टेफानी से छोटी एक बहन भी है।

एक दिन स्टेफानी के मॉ बाप पीकअप से एक भारी मेज लिए हमारे हॉस्टल मे आए.जो लिफ्ट मे न आ पाया।तीसरे मंजिल तक उसे ढो के ले जाना इनके वश का न था।असहाय ये जब तब बाहर आ कर ताक झॉक जाते थे और हसरत भरी नजर से मुझे देख जाते थे.पर मुझसे मदद मॉगने इनमे से कोई मेरे पास न आया।मै इनकी मुसीबत भॉप चुका था।

अचानक स्टेफानी मुझे अपनी ओर आते दिखी।मैनी अपनी नजरें अपनी किताब मे गाड़ ली।अब स्टेफानी मेरे बिल्कुल सामने खड़ी थी.पर उससे कुछ बोला नही जा रहा था।जब मैने अपनी नजरे उठाई.तब मेरा नाम स्टेफानी है.कहके उसने अपना हॉथ बढा दिया।अब मुझे भी उसे अपना नाम बताना पड़ा।

इनकी मुसीबत तो मै जानता ही था।बिना कुछ पूछे मैने अपनी किताब बन्द की और स्टेफानी को पकड़ा कर लिफ्ट की ओर बढ चला।उसके मॉ बाप को अपना परिचय देकर मै मेज के दूसरे सिरे पर जा पहुँचा।एक ओर मै अकेला.दूसरी ओर स्टेफानी के मॉ बाप मेज को उठाए तीसरी मंजिल तक जा पहुँचे।मेज वाकई बेहद भारी थी।हर पॉचवी सीढ़ी पर हमे ठहर कर सुस्ताना पड़ता था।

स्टेफानी के पास एक डेढ कमरे का अपार्टमेन्ट था जिनमे से छोटा वाला कमरा इनके सोने का था।इसी कमरे मे मेज रखी जानी थी।दूसरा कमरा जो इनका ड्राईन्गरूम था.एक छोटा मोटा चिड़ियाखाना ही था.जो पिंजड़ो और बेड़ों से भरा पड़ा था।रंग बिरंगे तोतें.खरगोश.हैमस्टर.कछुए.तीन बिल्लियॉ और पता नही कौन कौन से जानवर स्टेफानी ने पाल रखे थे।उसके ड्राईन्गरूम मे तिल रखने तक की जगह न थी।

सैंकड़ो बार इनसे डान्के श्योन सुन कर मै दुबारा होफ मे चला आया।

ये थी मेरी स्टेफानी से पहली मुलाक़ात।

अब जब भी स्टेफानी मुझे होफ मे अकेला बैठे देखती थी.हलो कहके मेरे पास बैठ जाती थी।उसे आसपास कोई न कोई जंगली फूल मिल ही जाते थे.जिनकी पंखुड़ियॉ वो नजरे झुकाये तोड़ती रहती थी।हमारे बातचीत का विषय रोजमर्रा का जीवन ही होता था।उसके वैवाहिक या इससे मिलते जुलते जीवन मे गोकि मेरी अभिरूचि थी.पर मै इस तरह के प्रश्नों को टाल जाता था।समय के साथ मै उससे काफी घुल मिल चला था और उसके बारे मे काफी कुछ जान चुका था।स्टेफानी की बेटी मेरे पास आने से कतराती थी।हल्के से हलो कहके हमारे होफ मे अपने खेलों मे व्यस्त हो जाती थी।

इन तमाम मुलाकातों के दौरान जो भी राय मै स्टेफी के बारे मे बना पाया था.उसे बुरा नही कहा जा सकता था।हॉस्टल मे तीन दिन चलाये जाने वाले कैन्टिन मे उससे और उसके परिवार से मेरी अक्सर मुलाकातें हो जाती थी।उसके मॉ बाप को मै मिस्टर और मिसेस क्राउजे.पर उसकी बहन को उसके नाम सबीने से बुलाता था।

स्टेफानी मेरी ही यूनिवर्सिटी मे बॉयलाजी पढती थी।मिस्टर क्राउजे पेशे से आरखिटेक्ट थे।उनकी अपनी प्राईवेट प्रेक्टिस थी जिसमे उनकी पत्नी भी उनकी मदद किया करती थी।सबीने अपनी स्कूल की पढाई खत्म कर के नर्स का कोर्स कर रही थी।

मै महसूस कर रहा था कि ये परिवार मुझसे कुछ ज्यादे ही घुलना मिलना चाह रहा है।आए दिन ही मुझे इनके कोई न कोई निमंत्रण मिलते थे .जिन्हे मै कोई न कोई बहाना बना कर टाल दिया करता था।

मेरे मस्तिष्क को स्टेफानी का ब्याह और उसका तलाक अच्छी तरह मथे हुए था।उसके माता पिता भी मेरी समझ से बाहर के थे।

बर्लिन मे मै शायद एकाध अफ्रिकनों से मिला था.पर मास्को मे तो कई अफ्रिकन मेरे साथी रह चुके थे।इसके पहले कि मै इनके बारे मे कुछ कहूँ .एक बात मै मान लेता हूँ कि शायद ही कोई ऐसा मनुष्य होगा जिसके अन्दर एक जानवर न बसता हो.जो यदा कदा जगता भी है.पर इन अफ्रिकनो के अन्दर का जानवर सिर्फ जगता ही नही है.ये खुद जानवर बन जाते है।इनसे न अपनी खुशी दबाई जाती है और न अपना गुस्सा।और सबसे बड़ी बात तो ये है कि सौन्दर्यबोध इनमे अंकुरित तक न हो पाया.उसके बढने फलने और फूलने की बात तो दूर की रही।

मास्को मे सात वर्षो तक मै बस एक बात का इन्तजार करता रहा कि शायद भूले भटके मुझे इस काले महादेश का कोई टकरा जाएगा और मेरी धारणा को एक भ्रान्ति मे बदल देगा.पर ऐसा कुछ भी न घटा और मुझे समय के साथ अपनी धारणा का समान्यकरण करना पड़ गया।

संतोष मुझे बस एक बात का था कि स्टेफानी ने इस जगत से अपना नाता तोड़ लिया था और तोड़े भी क्यों नही!अपने तीन वर्ष के वैवाहिक जीवन मे क्या उसने कम प्रताड़नायें झेली होंगी!हर शाम उसे कोमल पंखुड़ियों की तरह मसला ही तो गया होगा।

यूनिवर्सिटी के कैन्टिन मे भी मुझे देखते ही वो अपना खाना लिए मेरे मेज पर आ जाती थी।एक दिन कैन्टिन मे खाने के दौरान उसने मुझे अपने जन्मदिन पर आने का न्यौता दिया जो चार दिनो के बाद आने वाले बुद्धवार को था।

ःकहॉ मना रही हो अपना जन्मदिन!

ःअपने हॉस्टल के कैन्टिन मे

ःकितने लोगों को बुलाया है!

ःयही कोई पन्द्रह बीस लोगों को

ःतुम्हारे घर वाले भी तो आएँगे न!

ःहॉ

ःऐसी कोई खास चीज जो तुम्हे पसन्द हो तो अभीं ही बता दो।ज्यादे चक्कर मारना न पड़ेगा।खाली हॉथ तो मै आने से रहा।

ःठीक है.तुम मेरे लिए एक कैन्डल ले आना।

ःतुम कितने सालों की होने जा रही हो!

अब उसने अपनी नजरें उठाई

ःजन्मदिन पर आना फिर तुम्हे अपनी उम्र बताऊँगी।

ऐसी नशीली ऑखें मैने अपनी जिन्दगी मे कम ही देखी थी।इनमे गोता नही लगाया जा सकता था.बस डूबा जा सकता था।पता नही कौन सा नशा और सम्मोहन उसकी ऑखों मे था!अच्छा था कि वो अपनी नजरें ज्यादेतर झुकाये ही रखती थी।

मै समय से उसके जन्मदिन पर न जा सका।घर ही मै देर से आया था।नहाते धोते आठ बज गए।रैप किया कैन्डल और एक कैन्डल स्टैंड लिए मै लिफ्ट से बाहर निकला ही था कि कैन्टिन के फूल वाल्यूम मे बजते गाने सुनाई पड़े।वहॉ की खिड़कियों के शीशों से लाल हरी रोशनियॉ बाहर झॉक रही थी।कैन्टिन के इन्ट्रेन्स पर ही मेरी मुलाक़ात मिस्टर और मिसेस क्राउसे से हो गई।सबीने की गोद मे स्टेफानी की बच्ची सो रही थी।ये

लोग घर वापस जाना चाह रहे थे। इन्हे इनकी गाड़ी तक पहुँचा कर मै कैन्टिन की पिछली गेट से कैन्टिन मे घूसा। वहॉ का दृश्य देख कर एक बार तो मेरा दिमाग ही चकरा गया। बार पर सेल्व्स्ट फेरवाल्टूंग की तीन चार लड़कियॉ मिली। वो भी घर जाने की तैयारियॉ कर रही थी. वरना पूरा कैन्टिन अफ्रिकन लड़कों और ढली उम्र की जर्मन औरतों से खचा खच भरा पड़ा था। कैन्टिन के सारे बल्व बदल दिए गए थे। उनकी जगह लाल और हरे रंग के बल्व लगा दिए गए थे। अफ्रिकन धुन मे कोई गाना बज रहा था। सात आठ जोड़े अपने कूल्हे मटकाये जा रहे थे। बार के दाई तरफ चार मेज जोड़ कर लगाये गए थे। एक पर तरह तरह की कटी पेस्ट्रियॉ प्लेटों मे सजी पड़ी थी. दूसरे पर जूस वाईन शैम्पेन बीयर इत्यादि। मेज का शेष भाग रैप्ड प्रेजेन्टों से भरा पड़ा था। नाच की भगदड़ और इन रंगीन बत्तियों मे नहाये कैन्टिन मे स्टेफानी मुझे अभीं तक न दिखी थी। जब नाच बन्द हुआ. तब सारी रंगीन बत्तियॉ बुझा दी गई। कैन्टिन के मेन दरवाजे के पास दीवार पर एक समान्य बल्व जला। लोग बाग अपनी अपनी मेजों पर वापस लौटे। तभी स्टेफानी पर मेरी नजर पड़ी। कैन्टिन मे एक पुराना सोफा मेन रोड से लगे बड़ी खिड़की के सामने पड़ा था. जिस पर एक भीमकाय अफ्रिकन बैठा था और उसके जांघों के बीच स्टेफानी जमीन पर एक मेमने की तरह पसरी बैठी थी। इतना ही नही वो उसकी जांघे भी सहलाये जा रही थी। पास के ही मेज पर उसका तलाकसुदा पति भी एक औरत के साथ बैठा हुआ था।

मुझे देखते ही स्टेफानी उठने को हुई पर उस अफ्रिकन ने उसे अपनी जांघों से दबोच लिया। टेवल पर अपना प्रेजेन्ट रख कर मै वापस घर चला आया।

रास्ते भर बस यही बुदबुदाता रहाःमै तुम्हारी उम्र जानने आया था. तुम्हारी जात नही। एक दो अपशब्द भी मेरे मुँह से निकले। गई शाम तक मुझे ऐसा लगता रहा. जैसे कुछ खूँखार भूखे कुत्तों के बीच एक नवजात मेमनो को फेंक दिया गया हो। ढंग से मुझसे सोया न जा सका। पर एक फैसला मैने भी ले लिया थाःअब मै इस बदचलन के साये तक पर अपना पैर न रखूँगा।

दूसरे दिन सुबह मुझे अपने दरवाजे पर मेरा अपना रैप्ड प्रेजेन्ट मिला. जिसे खोला तक न गया था। यूनिवर्सिटी जाते वक्त उसे मै एक कचरे मे फेंकता चला गया।

होफ मे बैठना तो दूर रहा. मैने वहॉ जाना तक बन्द कर दिया। कैन्टिन को भी मैने अल्विदा कहा। स्टेफानी की याद आते ही मेरा मन विषाक्त हो उठता था। रह रह कर मुझे उस पर गुस्सा आता था।

ऐसे ही कई दिन गुजरे। एक दिन स्टेफानी हॉस्टल के लिफ्ट के सामने मिली। मै उसके हलो का बिना कोई जबाव दिए सीढियों से अपने कमरे मे आ गया। ऐसी ही उससे मेरी छिटपूट मुलाकातें होती रही। मै नजरें नीचे किए आगे बढ जाता था। मुझे उससे न कुछ सुनना था. न उसके बारे मे कुछ जानना था।

एक बार तो यूनिवर्सिटी के कैन्टिन मे उसने हद ही कर दी। मै अभीं खाना खाने बैठा ही था कि वो अपना प्लेट लिए मेरे मेज पर आई। मैने अपना खाना समेटा और एक दूसरी मेज पर जा बैठा। मेरे पीछे वो वहॉ भी जा पहुँची। अब मेरा गुस्सा भड़का। बात का बतंगड़ न बने इस वजह से मै अपनी भाषा को संयत मे ही रखा फिर भी मेरे मुँह से उसके लिए हूरे डिरने जैसे शब्द निकल ही गये। बिना कुछ खाए अपना प्लेट कन्वेयर पर पटक कर मै अपनी दूसरी क्लास मे जा कर बैठ गया।

हमारी बस बोटैनिकल गार्डेन पहुँच चुकी थी। मै स्टेफानी को लिए अपने ड्राईन्गारूम मे आया। उसका ओवरकोट लेकर मैने उसे आराम से बैठने को कहा। उसका ओवरकोट और अपना जैकेट टॉग कर मै दुवारा ड्राईन्गारूम मे आया और उससे कुछ पीने के लिए पूछा। वो बीयर पीना चाहती थी।

दो ग्लास बीयर से भर कर एक ग्लास उसे पकड़ाते हुए कहाःस्टेफानी!मुझे तुमसे कुछ कहना है

ःफिर कहते क्यों नही!

ःमै दरअसल आज हवाना मे तुमसे माफी मॉगने आया था। मेन्जा मे मेरे मुँह से कुछ ज्यादे ही उल्टा सीधा निकल गया था। तुम उसे भूल जाना।

ःतुम भी कौन सी बात लेकर बैठ गये!एक निम्फोमैनिन को लोग दूसरा कौन सा नाम देंगे!

ःकौन है निम्फोमैनिन!

ःमै। वो सारे लोग जो मेरे करीब आये. जानते हैं कि मै निम्फोमैनिन हूँ। तुम्हे पता है कि ये क्या होता है!

ःये तो पता है. पर ये क्यों होता है!ये मै नही जानता। मै सिगमून्डसहोफ मे एक निम्फोमैनिन से मिला था. पर उससे कुछ पूछ नही पाया। तुममे ये निम्फोमैनि कैसे आई!

ःपता नही।

ःबचपन के दिनों मे तुम्हारे साथ कोई हादसा तो नही हुआ था!

ःनही।

ःतुम्हे अपनी किस उम्र मे इसका आभास हुआ!

ःये मै तुम्हे नही बता सकती. पर जब मै तेरह साल की हुई. तब मेरे संग कोई भी सो सकता था।

ःतुम्हे ये भी पता था कि सेक्स क्या होता है!

ःहॉ।

ःपर कैसे

ःटेलीविजन के तमाम चैनेलों से। मम्मी पापा से।

ःदेखो स्टेफानी। न जाने क्यों आज तक मेरा मन ये कहता है कि निम्फोमैनि तमाम दूसरी विकृतियों की तरह हमारे दिमाग की एक विकृति है। मै सायकोलॉजिस्ट तो नही हूँ पर आज भी मै अपनी समझ के अनुसार ये बात डन्के की चोट पर कह सकता हूँ कि इन विकृतियों से कहीं न कहीं हमारा बचपन जुड़ा होता है। निम्फोमैनि. होमोसेक्सूएलिटी. लेस्वियैनिटी. सैडिज्म. डोमेना ये सब हमारी मानसिक विकृतियॉ हैं। तुम्हारे देश मे जो सबसे गन्दी बात आज तक मैने देखी. वो है बच्चों का मिसयूज। वहीं इन विकृतियों की बीजें पड़ जाती है। तुम्हारे देश मे इसे समान्य और सहज मान कर स्वीकार कर लिया जाता है. पर इनसे लड़ा जा सकता है। इस तरह की त्रूटियॉ हमे लोग देते हैं. हमारे ईश्वर नही। एकबारगी स्टेफानी सोच मे पड़ गई।

मै उसका और अपना ग्लास फिर से बीयर से भर दिया। मुझे लग रहा था. जैसे अचानक उसे कुछ याद आ गया हो। कहने लगीः

जो कुछ भी अभीं तुम मुझसे कहे. वो मुझे निरर्थक नही लगा। संक्षेप मे ही तुम्हे बतातीी हूँ। मुझे अपने दादा की गोद मे बैठना बड़ा अच्छा लगता था। जिस तरह वो मुझे सहलाते थे. उस तरह से कोई दूसरा नही। जब तक वो जिन्दा रहे. हम हर शनिवार को उनसे मिलने जाते थे। गर्मी के दिनो मे उनके गार्डेन मे. ठंढ के दिनो मे उनके घर। मैने अपनी दादी को कभीं नही देखा। मेरे दादा पेशे से बढई थे। मेरे और सबीने को हर शनिवार को वो कोई न कोई खिलौना अपने हॉथों से बना कर देते थे। दोपहर के खाने के बाद मेरे पापा मम्मी और सबीने घूमने निकल पड़ते थे. पर मै अपने दादा के संग उनके बेसमेन्ट मे उनके हॉथों बनते खिलौनो को देखने के लिए रूक जाती थी। वो मेरे दादा थे। उन्हे मुझे सहलाने पुचकारने का उतना ही हक़ था। जब मै तेरह वर्ष की हुई. तो पहली बार अपने एक पड़ोसी के संग सोई। उसकी उम्र पापा जितनी ही थी। फिर मैने पलट कर नही देखा। मुझे जिसका भी इशारा मिला. उसी के संग चल दी।

प्रेम के आयाम मे जो प्रेम करता है. वह अकेला है. दुःख के आयाम मे जो दुःख भोगता है. वो भी अकेला है. पर संवेदनाओं के दूसरे आयामों का अनुभावक कभीं अकेला नही होता है। ये बात मुझे बड़ी देर मे समझ मे आई।

जिस लड़की को एक तिनके तक से छूने का साहस नही किया जा सकता था. उसे इस समाज ने एक निम्फोमैनिन बना के इस धरती पर जीने के लिए छोड़ दिया था। आए दिन ही मेरी ऑखों के सामने एक दृश्य रह रह कर सजीव हो उठता थाः एक घने जंगल मे अलाव जल रही है. जिसके समीप ही स्टेफानी नंगी अपना चेहरा अपने घुटनो मे छिपाए बैठी है और उसे घेरे आठ दस हृष्ट पुष्ट बदशक्ल खूँखार अधनंगे हब्शी ढपले की ताल पर नाच कूद रहे है।

एक और दुःस्वप्न भी आये दिन मुझे सपनो मे डराता है ः

मिस्टर क्राउजे अपनी पच्चासवीं साल गिरह बड़ी धूम धाम से मनाना चाहते थे। वानजे नाम के समुद्र मे उन्होने एक दुमंजिला पानी का जहाज किराये पर लिया था। ये जहाज उनके एक स्कूल के साथी का था. जो इस जहाज का कैप्टन भी था। पच्चास से भी ज्यादे मेहमान आने वाले थे जिनमे ज्यादेतर उनके स्कूल के साथी थे।

आठ बजे तक सभी मेहमानो को जहाज पर पहुँच जाना था। मै भी एक अच्छी वाईन रैप करवा कर समय से वहॉ पहुँच गया था। क्राउजे परिवार के अलावे वहॉ मै किसी को भी नही जानता था। स्टेफानी. उसकी बेटी और सबीने. इन तीनो ने लम्बी लम्बी फ्राकें पहन रखी थी और सबके सिर पर मोतियों का ताज था। मिस्टर क्राउजे भी अपनी लाल कोट और काली नेक टाई मे कम से कम मुझे पच्चास के न लग रहे थे।

सवा आठ बजे हम सभी जहाज की नीचली मंजिल पर थे. जहॉ खाने पीने के सामान बड़ी सुरूचि से सजे पड़े थे। मुझे मिसेस क्राउजे से ही पता लगा कि खाने पीने की सारी तैयारियॉ कैप्टन की पत्नी और उसकी बेटी ने की है।

पहला प्रोस्ट कैप्टन का ही था जो मुझे आज तक याद हैः

मनफ्रेड मेरे स्कूल का साथी है और मुझसे उम्र मे बस तीन महीने छोटा है। आज वो पच्चास वर्ष का हो गया है. बिना किसी बीमारी से लड़े. जबकि मेरे दिल पर दो बार दस्तक पड़ चुके है। मै बूढा हो चला और वो डिन मार्टिन बने घूमता है। मै अपने रश्क एक तरफ रख कर उसे उसके पच्चासवीं सालगिरह पर अपनी ओर अपने परिवार की ओर से मुबारकबाद देता हूँ।

तालियों की गड़गड़ाहट होने ही वाली थी कि उसने इशारे से मना करते हुए अपना कहना जारी रखाः

आज का सारा खाना मेरी पत्नी और बेटी का बनाया हुआ है. जिनमे आप सभी को मछलियॉ और मछलियॉ और सिर्फ मछलियॉ मिलेंगी। बोर्ड पर शैम्पेन के अलावे तमाम दूसरे ड्रिन्क्स अपने अनुकूल तापमान पर हैं। हमारे पास जरूरत से ज्यादे खाने पीने के सामान है। मैने एक बैंड का भी इन्तजाम कर रखा है। आप खाते जाईये. पीते जाईये और नाचते जाईये। मै एक ऐसा कोर्स लेने जा रहा हूँ. जो आठ घन्टे का है। ये कोर्स मै लहरों से दूर रखूँगा ताकि किसी टेबल की कोई ग्लास नीचे न गिरे और न कोई किसी गलत कन्धे से टकरा कर किसी गलत गोद मे जा गिरेःकह कर कैप्टन ने अपने शैम्पेन का ग्लास ऊपर उठाया। सारा हॉल कहकहों. मुबारकबादों और तालियों से गूँज उठा।

कैप्टन अपनी कैबिन मे चला गया और लोग बाग खाने पीने के सामानों पर टूट पड़े।

मै अपना खाना मिसेस क्राउजे के साथ तब लेने गया जब डेक पर बैन्ड वालों का पहला रूल ड्रम पर पड़ा। सभी डेक पर चले गए। मिसेस क्राउजे के साथ मै नीचे ही बैठा रहा। जब मै डेक पर आया तो देखा कि स्टेफानी अपनी बेटी को गोद मे लिए नाचे जा रही थी। सबीने किसी एक अधेड़ की बॉहों मे थी और मिस्टर क्राउजे एक पोलेन्ड की शादीसुदा लड़की के साथ नाच रहे थे. जो उनकी प्रेक्टिस मे टेक्निकल ग्राफिक का काम सम्हालती थी।

बारह बजे से लेकर सुबह के तीन बजे तक मिस्टर क्राउजे नाच के नाम पर डेक पर अपनी बेटियों और अपनी पत्नी के अलावे हर औरत या लड़की का बदन नशे मे धुत्त टटोलते रहे और उनकी पत्नी मेरे बगल मे बैठी ऑसुओं मे नहाती रही।

सुबह के चार बजे हमारी जहाज ने अपना तट छूआ।

कैप्टन ने वाकई अपना कोर्स लहरों से दूर रखा था। न तो किसी टेबल से कोई ग्लास नीचे गिर कर टूटी और न कोई प्लेट ही। सारे मेहमान सोये पड़े थे। एक सरसरी नजर मैने डेक पर डाली। सबीने एक बैंच पर सोई पड़ी थी। उसके पैरों से लिपटी स्टेफानी की बेटी सो रही थी। डेक की फर्श पर मिस्टर क्राउजे अपनी पोलीन के साथ लिपटे सो रहे थे। मिसेस क्राउजे भी अपने बैंच से नीचे न सरकीं. पर वो अकेली सो रही थी। कैप्टन की बीबी बैन्डलीडर के संग. उसकी बेटी किसी और के संग।

तभी जहाज का कैप्टन डेक पर आया और गैरों के संग सोती अपनी बेटी और पत्नी पर एक नजर डाल कर ठहाका माराःसब कुछ के बावजूद मुझे लग रहा है कि मै अपना जहाज लहरों से दूर न रख पाया।

कैप्टन से विदा लेने से पहले मै निचली मंजिल पर बने टवायलेट मे गया। कैप्टन के कैबिन मे रखे एक सोफे पर स्टेफानी अधनंगी लेटी पड़ी थी। जब मै दुबारा डेक पर आया. तब कैप्टन मुझसे आलेस गुटे कहके विदा लेना चाहा। उसका हॉथ झटक कर मै लगभग चिल्ला पड़ाःअपनी जहाज की जगह खुद अपने आप को लहरों से दूर रखना सीखो कमीने।

मै जहाज के बाहर आ गया। रोजाना हजारों नावों और जहाजों से मथा जाने वाला समुद्र वानजे अभीं भी सोया पड़ा थाः